

कोर्ण s. u. 3. कर् und 4. कर्.

कोर्ण f. nom. act. von 3. कर् P. 8, 2, 44, Vārt. 1, Sch. Vop. 26, 184.

कीर्तन (von कीर्त्य) das Erwähnen, Aufzählen, Berichten, Erzählen; neutr.: तद्यदि संधानकीर्तनं करिष्यामः स भूयो उत्पत्ते कोर्पं करिष्यति Pāṇ. 131, 11. ब्रह्मर्षिपुराणचरितकीर्तनेन 163, 21. परेने दोषः H. 268. ब्रह्मना कीर्तनं मम Dev. 12, 21. कीर्तनं श्रवणं दानं दर्शनं चापि पार्थिव । गयो प्रशस्यते MBu. 13, 2694. Buṅg. P. 4, 2, 17. fem. कीर्तना Suṣr. 2, 306, 9. Rukm. Çabdar. im ÇKDr.

कीर्तनीय (wie eben) adj. zu erwähnen, zu nennen; zu preisen: श्रयो-
मुलानां धुरि कीर्तनीया Ragh. 2, 2. एतद्वै कीर्तनीयस्य सूर्यस्वानिततेजसः ।
नामाष्टशतकम् MBu. 3, 158.

कीर्तन्य (wie eben) adj. erwähnenswerth, erzählenswerth: (भवतः) की-
र्तन्यतीर्थयशसः Buṅg. P. 3, 15, 48. 28, 18. ते कीर्तन्योदारकर्मणः 20, 6. ता-
नि मे श्रद्धाधनस्य कीर्तन्यान्नुकीर्त्य 23, 3. — Vgl. कीर्तन्य.

कीर्त्य (denom. von कीर्ति), कीर्तयति (ep. auch med.) Dātup. 32, 110
(कृत); aor. श्रचिकीर्तत् und श्रचिक्वत् P. 7, 4, 7, Sch. 1) commemorare,
gedenken, Erwähnung thun, nennen, aufzählen, hersagen, mittheilen,
verkünden, erzählen, rühmend erwähnen; mit dem gen.: यथासौ मम के-
र्वतो नान्यासां कीर्त्याशन AV. 7, 37, 1. 38, 4. अपाम् लोकानाम् Çat. Br.
3, 1, 4, 15. यद्गुरुस्य कीर्तयति TS. 6, 1, 2, 8. न यज्ञे रत्नसो कीर्तयेत्, उपाशु,
उच्चैः Air. Bu. 2, 7. mit dem acc.: दिवाकीर्त्यमदिवा कीर्तयतः 3, 31. श्र-
युष्मतां कथाः कीर्तयतः Åçv. Gṛu. 4, 6. एवं विदुषः पापं न कीर्तयेत् Çat.
Br. 8, 5, 4, 17. 12, 1, 4, 22. अत्र गाथां वायुगीताः कीर्तयन्ति पुराविद्ः M. 9,
42. पितुः स नाम संकीर्त्य कीर्तयेत्प्रपितामहम् 3, 221. ज्येष्ठानुज्येष्ठतामेषां
नामधेयानि वा विभो । धृतराष्ट्रस्य पुत्राणामानुपूर्व्येण कीर्तय MBu. 1, 2727.
एष धर्मविधिः कृत्स्नश्चातुर्वर्ण्यस्य कीर्तितः M. 10, 131. 1, 42. 3, 36. 5, 74.
9, 65. भोःशब्दं कीर्तयेदत्ते स्वस्य नाम्नो ऽभिवादान् 2, 124. असंश्रये चैव गु-
रोर्न किंचिदपि कीर्तयेत् 2, 203. व्यक्तं न कीर्तयेद्ब्रह्म 4, 110. 111. दत्त्वा दानं
कीर्तयतु (verkünde öffentlich) यस्ते हरति पुत्रकर्म MBu. 13, 4583. आसितं
शयितं भुक्तं सूत रामस्य कीर्त्य R. 2, 38, 10. सततं कीर्तयतो नाम् Buṅg. 9,
14. कीर्तितान्कीर्तयिष्यामि MBu. 13, 7663. N. 20, 29. न सा विद्या न त-
च्छिल्पं न तदानं न सा कला । श्रयार्थिभिर्न तद्वैर्धनिनो यत्र कीर्त्यते ॥
die nicht gelobt würde Pāṇ. 1, 4. धातुरचिकीर्तच्च विक्रमम् Bhāṭṭ. 13,
72. — R. 1, 4, 9. Pāṇ. 1, 110. Ragh. 1, 87. AK. 3, 4, 4, 1. पुराडाशः —
ऊतशेषे च कीर्त्यते wird auch in der Bed. von ऊतशेष aufgeführt, ge-
nannt Trik. 3, 3, 429. 4, 3. — med.: वज्रुत्तानामधेयानि पत्रगानाम् — न
कीर्तयिष्ये MBu. 1, 1549. सुनृशंसमिदं कर्म तेषां क्रूरोपसंस्कृतम् । कीर्तयस्व
यथावृत्तम् 5652. 8333. अन्तं प्रतरमाणश्च कीर्तयेत् पितामहान् 3, 4387. की-
र्तयानो नरो ह्येतान् देवान् मुच्यते सर्वकिल्बिषैः 7661. — 2) Etwas als
Etwas erwähnen, für Etwas erklären, nennen, heissen; pass. heissen,
gelten: द्विविधं कीर्त्यते द्वैधं षाडुपयगुणवेदिभिः M. 7, 167. तत्तुर्जातस्तयो-
ग्रायो श्रपाक इति कीर्त्यते 10, 19. विप्रसवैव प्रहस्य विशिष्टं कर्म कीर्त्यते
123. 12, 89. राज्ञसी कीर्तिता हि सा 3, 280. 1, 11. प्रमाणं लिखितं भुक्तिः
मानिष्येति कीर्तितम् Jāṅ. 2, 22.

— श्रुतु gedenken, Erwähnung thun, verkünden, hersagen, erzählen:
राममल्लिष्टकर्मिणं निमित्तैरनुकीर्त्यन् R. 5, 29, 33. यानि रामो ऽनुकीर्ति-
यत् 19, 13. वाचापि पुरुषान्यान्मुत्रता नान्वकीर्तयत् MBu. 1, 4381. R. 1,
14. 22. ये चान्ये नानुकीर्तिताः MBu. 1, 2725. 3, 5025. Suṣr. 1, 123, 14. न

चानुकीर्तयेद्व्य दत्त्वा er verkünde nicht laut MBu. 3, 13259. यथानुकीर्त्य-
त्येतत् — प्रातरुत्थाय डःस्वप्राद्युपशान्तये Buṅg. P. 8, 4, 15. दिशामभिज्ञं
ब्रह्मन्विस्तरैणानुकीर्त्य erzähle MBu. 2, 994. — Vgl. अनुकीर्तन.

— समभिर्berichten, erzählen: सह वृक्ष्यन्धकव्याघ्रैरुपासां चक्रिरे तदा ।
तत्र नानाविधाकाराः कथाः समभिकीर्त्य वै ॥ MBu. 14, 2066.

— उद् preisen: महिमानं यदुत्कीर्त्य तव संक्रियते वचः । श्रमेण तद-
शतया वा न गुणानामिवतया ॥ Ragh. 10, 33.

— परि 1) laut überall verki inden, verkünden, mittheilen, erzählen,
preisen: स्वकर्म Pār. Gṛu. 3, 12. M. 11, 122. न दत्त्वा परिकीर्तयेत् 4, 236.
स्वं नाम परिकीर्तयेत् 2, 122. यः कश्चित्कस्यचिद्धर्मो मनुना परिकीर्तितः
7. 3, 200. 4, 221. R. 1, 71, 1. 3, 27, 24. Buṅg. P. 8, 14, 11. इत्येतन्मात्स्यकं
नाम पुराणं परिकीर्तितम् । श्राव्यान्मिदमाख्यातं सर्वपापहृत् मया ॥ MBu.
3, 12802. स्यादश्चिनो च परिकीर्तयतो न रोगः 13, 7160. — 2) für Etwas
erklären, nennen; pass. heissen, gelten: उर्थं नार्भेर्मध्यतरः पुरुषः परि-
कीर्तितः M. 1, 92. श्रभियोगे ऽथ साह्ये वा दुष्टः स परिकीर्तितः Jāṅ. 2, 15.
Buṅg. 18, 7. शुद्धमोक्षस्य यः स्नेहः स वसा परिकीर्तिता Suṣr. 1, 327, 10.
238, 15. Pāṇ. 1, 211. Citat beim Schol. zu Çik. 80 und 51, 16. Sān.
D. 83.

— संपरि aufzählen: धावत्तरेषु याः सप्त कलाः संपरिकीर्तिताः Suṣr. 2,
268, 21. 1, 200, 2.

— प्र 1) aufzählen, mittheilen, verkünden: उद्ध्यस्वेति च ऋचो यथा-
संख्यं प्रकीर्तिताः Jāṅ. 1, 299. किं तत्र प्रकीर्तयित्वा भृशोक्त्वर्थनम् MBu.
4, 306. एषा धर्मस्य वे योनिः समासेन प्रकीर्तिता M. 2, 25. 9, 56. 10, 130.
Buṅg. P. 7, 13, 80. — 2) für Etwas erklären, nennen; pass. heissen, gel-
ten: किमवदिन्ध्योर्भेर्मध्यं यत्प्राग्विचक्षणतापि । प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्येद-
शः प्रकीर्तितः ॥ M. 2, 21. 3, 27. Pāṇ. 1, 118. Buṅg. 10. — 3) gut-
heissen, für angemessen erachten: दत्ते त्वर्थं प्रकीर्तितम् Jāṅ. 2, 148. श्र-
वस्वकन्दप्रदानस्य सर्वे कालाः प्रकीर्तिताः Pāṇ. 1, 37. नायिकानां सखी-
नां च शैरसेनी प्रकीर्तिता Buṅg. zu Çik. 9, 6.

— संप्र 1) erwähnen: दन्तिणावयवाः केचिदेदैर्यं संप्रकीर्तिताः MBu. 13,
4926. — 2) für Etwas erklären, nennen; pass. heissen, gelten: त्यागो
हि — त्रिविधः संप्रकीर्तितः Buṅg. 18, 4. Pāṇ. 1, 136. वमनद्रव्ययोगा-
नां दिगिभ्यं संप्रकीर्तिता Suṣr. 1, 160, 9. 238, 14. धूमवंशशरामर्त्याः सुपर्वा-
णाः प्रकीर्तिताः d. i. सुपर्वन् hat die Bedeutung von धूम u. s. w. Trik. 3,
3, 272. 4, 6.

— सम् erwähnen, hersagen, verkünden, preisen: मयि संकीर्तिते MBu.
in Benf. Chr. 13, 4. पितुः स नाम संकीर्त्य कीर्तयेत्प्रपितामहम् M. 3, 221.
MBu. 3, 2200. 4039. Çik. 82, 9. नाम्ना च गोत्रेण च कर्मणा च संकीर्त्यभू-
मिपत्नीन्समेतान् MBu. 1, 6980. पुरस्तादेव रामस्य गुणाः संकीर्तितास्तव R.
3, 46, 3. तथ्यं संकीर्तयिष्यामि 4, 59, 3. एवं संकीर्त्य राजानम् Buṅg. P. 9,
5, 22.

कीर्ति (von 2. कर्) ved. P. 3, 3, 97. कीर्ति klass. Uṇ. 4, 120. f. 1) das
Gedenken, Erwähnung; Rede, Kunde: तां सु तै कीर्तिं मधवन्महिषा य-
द्वा भीते रोदसी श्रुत्वेतान् RV. 10, 34, 1. धृत्कीर्तिं bei Erwähnung des
Ghṛta Çat. Br. 1, 4, 4, 13. 19. 14, 9, 2, 11. कीर्तिं बृहन्मो वि हरि दिव्ये
AV. 5, 20, 9. पापी कीर्तिः Çat. Br. 3, 1, 2, 21. Åçv. Çr. 9, 7. मुमित्रिणा वाचं
उन्नुमे कल्याणी कीर्तिनावद् L'it. 3, 11. Çāṅk. Çr. 13, 14, 6. कीर्ति =
शब्द Çabdar. im ÇKDr. — 2) gute Kunde, Ruhm AK. 1, 1, 5, 12. 3, 4, 2.